International Journal of Research in Economics and Social Sciences(IJRESS)
Available online at: http://euroasiapub.org
Vol. 8 Issue 2, February- 2018
ISSN(o): 2249-7382 | Impact Factor: 6.939 |

गीता दर्शन और शैक्षिक योगदान

डॉ. योगिता मकवाना, व्याख्याता – संस्कृत
बाबू शोभाराम राजकीय, कला महाविद्यालय अलवर (राज.)

सारांश

गीता संस्कृत साहित्य की ही नहीं अपितु सम्पूर्ण विश्व का अमूल्य ग्रन्थ है। महर्षि वेदव्यास द्वारा रचित विश्व प्रसिद्ध आर्ष महाकाव्य महाभारत के भीष्म पर्व में वर्णित भगवान श्री कृष्ण के मुखारविन्द से निकली दिव्य वाणी गीता कहलाती है गीता के 18 अध्याय और 700 श्लोकों में श्री कृष्ण द्वारा अर्जुन को महाभारत युद्ध क्षेत्र में दिया गया ज्ञान भक्ति और कर्म योग का प्रेरणास्पद महान उपदेश है। गीता में आत्मिक ज्ञान के सागर उपनिषदों का सार तत्त्व निहित है गीता में जीव ब्रह्म, जगत्, माया, मोक्ष, आत्मा, परमात्मा, ईश्वर और अनेक जिज्ञासाओं का वर्णन और समाधान श्री कृष्ण द्वारा प्रस्तुत किए है अतएवं गीता दर्शन स्वरूप में सुशोभित और प्रसिद्ध है।

मुख्य शब्द–ज्ञान योग, भक्ति योग, कर्म योग, मोक्ष, निष्काम, परा, अपरा

प्रस्तावना

उत्तरवैदिक कालीन युग के महाभारत और गीता महान ग्रन्थ है। महाभारत जैसे विशाल महाकाव्य का गीता संक्षिप्त एवं सरलतम रूप है जो संस्कृत भाषा में रचित है। श्रीकृष्ण द्वारा अर्जुन को दिया महान उपदेश अर्जुन के मोह को भंग कर उसे युद्ध करने की प्रेरणा देता है तथा इस नश्वर संसार के बारे सच्चा ज्ञान प्रदान करता है। इस प्रकार अर्जुन एवं श्रीकृष्ण के मध्य संवाद ही गीता की मुख्य विषय वस्तु है।

गीता का दर्शन आदर्शवादी दर्शन है। गीता दर्शन आत्मा और परमात्मा में विश्वास रखता है। संसार की नश्वरता का ज्ञान कराता है। मोह को त्याग कर परमपद मोक्ष की प्राप्ति का मार्ग बताता है निष्काम कर्म द्वारा ही मोक्ष प्राप्त किया जा सकता है इन्द्रिय निग्रह द्वारा ही सांसारिक दुखों से छुटकारा प्राप्त किया जा सकता है। काम, क्रोध, माया, लोभ आदि सांसारिक बन्धन के साधन है। गीता इन सभी से मुक्त करा कर आत्मस्वरूप का दर्शन

International Journal of Research in Economics and Social Sciences(IJRESS)
Available online at: http://euroasiapub.org
Vol. 8 Issue 2, February- 2018
ISSN(o): 2249-7382 | Impact Factor: 6.939 |

कराती है। सम्पूर्ण गीता शिक्षा का भण्डार है अतएव शिक्षा जगत में गीता का योगदान निम्न प्रकार से है–

गीता दर्शन का वैशिष्ट्य

(1) ज्ञान योग– अज्ञान का अन्त करने के लिए ज्ञान अनिवार्य है। ज्ञान दो प्रकार का है – तार्किक ज्ञान, आध्यात्मिक ज्ञान। तार्किक ज्ञान में वस्तुओं के ब्राह्य स्वरूप की चर्चा की जाती है। आध्यात्मिक ज्ञान वस्तुओं के वास्तविक स्वरूप की चर्चा करता है। ज्ञान से कर्मों की अपवित्रता का नाश होता है। गीता में कहा गया हैं "जो ज्ञाता है, वह हमारे सभी भक्तों में श्रेष्ठ है।"

(2) भक्ति मार्ग–भक्ति 'भज' शब्द से बना है जिसका अर्थ है ईश्वर सेवा। जो ईश्वर के प्रति प्रेम समर्पण, त्याग व भक्ति का भाव रखता है। ईश्वर उसे प्रेम करता हैं। स्वयं श्रीकृष्ण ने कहा हैं " भक्त मेरे प्रेम का पात्र है।" भक्ति का मार्ग गूंगे के गुड़ के समान है जिसका आस्वादन करने वाला ही अनुभव करता है। भक्ति से पूर्णता की प्राप्ति होती है।

(3) कर्मयोग– उचित कर्म से व्यक्ति का जीवन श्रेष्ठता को प्राप्त करता है। गीता में निष्काम कर्म को जीवन में उतारने का सन्देश दिया गया हैं। जड़–चेतन सभी अपने–अपने कर्मों में रत हैं किन्तु मानव 'परिणाम' के लिए इच्छा रखता है, निष्काम कर्म में बिना फल की अभिलाषा के कर्म करने का मौलिक उपदेश दिया गया है।

गीता के अनुसार शिक्षा का अर्थ और लक्ष्य

'न हि ज्ञानेन सदृशं पवित्रमहि विद्यते' गीता में शिक्षा को ज्ञान के अर्थ में ग्रहण किया हैं। "गीता के अनुसार शिक्षा जन्म–जन्मान्तर तक चलने वाली प्रक्रिया है।" ज्ञान दो प्रकार का हैं–सांसारिक तथा आध्यात्मिक।

गीता में सात्विक ज्ञान की व्याख्या करते हुए बताया गया है जिसके द्वारा समस्त प्राणियों में केवल एक निर्विकार भाव देखा जाता हैं वहीं सात्विक ज्ञान है। इसकी प्राप्ति के लिए अग्रलिखित लक्ष्यों का निर्धारण किया गया हैं–

International Journal of Research in Economics and Social Sciences(IJRESS)
Available online at: http://euroasiapub.org
Vol. 8 Issue 2, February- 2018
ISSN(o): 2249-7382 | Impact Factor: 6.939 |

(1) मोक्ष प्राप्ति का लक्ष्य–काम, क्रोध, मद, लोभ, मोह, माया आदि आसक्तियों से दूर हटकर, इन्द्रिय निग्रह द्वारा निष्काम कर्म सम्पन्न कर आवागमन के बन्धन से छुटकारा प्राप्त करना गीता के अनुसार शिक्षा का लक्ष्य है।

(2) आत्मपूर्णता की प्राप्ति–सात्विक ज्ञान द्वारा परम तत्त्व की प्राप्ति आत्मपूर्णता का लक्ष्य है। इसकी प्राप्ति के लिए सर्वांगीण विकास पर गीता में बल दिया गया है।

(3) निष्काम कर्म की प्रेरणा का लक्ष्य–गीता के अनुसर निष्काम कर्म के लिए प्रेरित करना शिक्षा का लक्ष्य हैं। कर्महीन व्यक्ति समाज के लिए अनुपयोगी है। अतः व्यक्ति को कार्य करना शिक्षा का लक्ष्य है। कर्महीन व्यक्ति समाज के लिए अनुपयोगी हैं। अतः व्यक्ति को कार्य करने रहना चाहिए किन्तु फल की इच्छा से विरक्त रहकर।

(4) सामाजिक उन्नयन का लक्ष्य–गीता दर्शन का चिन्तन सामाजिक पृष्ठभूमि परिपक्व हुआ है अतः परोपकार, त्याग व सेवाभाव को विकसित कर सामाजिक उन्नयन शिक्षा का लक्ष्य स्वीकार किया गया हैं।

(5) चिन्तन क्षमता का विकास– नैतिक–अनैतिक, कर्म–अकर्म, अच्छा– बुरा इनमें किसका वरण करना है यह विवेक चिन्तन क्षमता से ही विकसित हो सकता है। अतः गीता दर्शन व्यक्ति में चिन्तन क्षमता का विकास करना भी शिक्षा का लक्ष्य स्वीकार करता हैं।

गीता दर्शन के अनुसार शिक्षा के सिद्धान्त

शिक्षादर्शन की दृष्टि से भगवद्गीता अमूल्य निधि है क्योकि उसमें सभी 'प्रचलित दार्शनिक मान्यताओं तथा सिद्धान्तों का समन्वय दृष्टिगोचर होता है। डा. एल. के. ओड के शब्दों में–"भारतीय शिक्षा दर्शन का सार यदि कहीं देखना हो तो वह गीता में दिखायी देता है।"

गीता के प्रमुख दार्शनिक सिद्धान्त निम्नलिखित प्रकार से है–

1. ब्रह्म– गीता के अनुसार ब्रह्म या ईश्वर सर्वोपरि सत्ता है जो अविनाशी, नित्य, शुद्ध, सर्वत्र व्याप्त सार्वकालिक व अनादि है। ब्रह्म के दो रूप है– निर्गुण व सगुण इनका विस्तृत विवेचन गीता के आठवें व तेरहवें अध्याय में मिलता है।

International Journal of Research in Economics and Social Sciences(IJRESS)
Available online at: http://euroasiapub.org
Vol. 8 Issue 2, February- 2018
ISSN(o): 2249-7382 | Impact Factor: 6.939 |

2. आत्मा– गीता दर्शन में आत्मा को अविनाशी, अजन्मा, नित्य, शाश्वत, अचिन्त्य, सर्वव्यापक, निर्विकार व अव्यक्त बताया गया है। आत्मा परमात्मा का ही अंश है। गीता के द्वितीय अध्याय में आत्मा के स्वरूप का विशद् वर्णन मिलता है।

3. जगत्– गीता में जगत् के विषय में कहा गया है, कि जिस प्रकार वृक्षकी उत्पत्ति बीज से होती है और अंत में बीज में ही वृक्ष विलिन हो जाता है। उस प्रकार जगत् की उत्पत्ति ब्रह्म से होती है। और अंत में उसी ब्रह्म में विलिन हो जाताहै।

4. अपरा एवं परा प्रकृति–गीता में सृष्टि की रचना को दो प्रमुख प्रकारों में विभक्त किया हैं–

अ. अपरा प्रकृति–पंचतत्व– आकाश, वायु अग्नि, जल, पृथ्वी तथा मन, अहंकार और बुद्धि 8 तत्त्व अपरा प्रकृति में सम्मिलित है। यह भौतिक, जड़ तथा अचेतन होती है।

आ. 'परा प्रकृति'– यह जीव है,जो चेतन तत्त्व में समन्वित होता है, यह जगत् को धारण करती है।

अपरा व परा प्रकृति के ऊपर ईश्वर तत्त्व है। वस्तुतः जीव (आत्मा) ईश्वर का ही अंश है।

5. ज्ञान योग, कर्मयोग एवं भक्ति योग का समन्वय– गीता में ज्ञान योग, कर्मयोग व भक्तियोग का अद्भुत् समन्वय प्रस्तुत किया गया है। ज्ञान योग सर्वश्रेष्ठ है, क्योंकि ज्ञान योग के द्वारा ही व्यक्ति सच्चिदानन्द के दर्शन करता हुआ मोक्ष को प्राप्त होता है। कर्मयोग का अर्थ गीता में 'कर्त्तव्य' अथवा सामाजिक दायित्व से लिया गया है। गीता में कर्मयोग का वहीं सुन्दर व्याख्या प्रस्तुत की गयी है। निष्काम कर्मयोग से ही मोक्ष की प्राप्ति सम्भव होती है। भक्ति मार्ग को गीता में ईश्वर प्राप्ति का सर्वश्रेष्ठ मार्ग कहा गया है। ईश्वर में श्रद्धा रखकर, निःस्वार्थ भाव से कर्म करके व्यक्ति मोक्ष को प्राप्त होता है।

गीता दर्शन के अनुसार शिक्षा के उद्देश्य

1. मोक्ष प्राप्ति का उद्देश्य– गीता का प्रथम उद्देश्य मानव को आवागमन, जन्ममरण के बन्धन से मुक्त करा कर मोक्ष प्राप्ति कराना है। मोक्ष प्राप्ति निष्काम कर्म द्वारा ही सम्भव है। गीता दर्शन के अनुसार ज्ञान केवल पुस्तकीय ज्ञान न होकर आत्म–ज्ञान होना

International Journal of Research in Economics and Social Sciences(IJRESS)
Available online at: http://euroasiapub.org
Vol. 8 Issue 2, February- 2018
ISSN(o): 2249-7382 | Impact Factor: 6.939 |

चाहिए, जिससे व्यक्ति 'स्व' को पहचान सके और उसका विकास मन पर नियन्त्रण कर–काम, क्रोध, मद मोह लोह, माया आदि आसक्तियों से दूर रह सके। इन्द्रिय निग्रह द्वारा ही सांसारिक दुःखों से छुटकारा पाना सम्भव है। अतः गीता दर्शन के अनुसार शिक्षा का प्रमुख उद्देश्य "मोक्ष प्राप्ति" है।

2. उच्च सात्विकता के विकास का उद्देश्य–मोक्ष प्राप्ति सात्विक जीवन से ही प्राप्त की जा सकती है। सात्विक जीवन का आधार इन्द्रियों पर नियन्त्रण करने से ही नैतिकता का विकास होता है और उच्च नैतिकता ही सात्विकता की ओर प्रेरित करती है। नैतिक विकास के लिए धार्मिक एवं सामाजिक मूल्य हीआधार है। सामाजिक मूल्य समाज पर निर्भर करते हैं अर्थात् समाज के अनुसार ही सामाजिक मूल्यों का निर्धारण किया जाता है। अतः व्यक्ति की उच्च नैतिकता एवं सात्विकता का मूलाधार समाज है। 'व्यक्ति सामाजिक प्राणी है।' अतः उसे समाज के अनुकूल आचरण एवं व्यवहार करना पड़ता है।

3. निष्काम कर्म की प्रेरणा का उद्देश्य–

'कर्मण्येवाधिकारस्ते मा फलेषु कदाचन।

मा कर्मफलहेतुर्भूर्मा ते संगोऽस्तवकर्मणि ।।"

गीता का उक्त श्लोक कर्म वह भी निष्काम कर्म करने की प्रेरणा देता है। कर्म करना मानव का कर्त्तव्य है, कर्म का फल देना अन्य शक्ति के हाथ में है। इस प्रकार गीता दर्शन के अनुसार शिक्षा का उद्देश्य बालक को 'कर्म' करने की प्रेरणा देना है। कर्त्तव्य के द्वारा ही व्यक्ति लौकिक एवं पारलौकिक, भौतिक एवं अभौतिक सुखों को प्राप्त कर सकता है। कर्त्तव्यहीन/कर्महीन व्यक्ति इस जगत में कुछ भी प्राप्त नहीं कर सकता है। अतः बालकों को शिक्षा द्वारा कर्म प्रधान जीवन व्यतीत करने की प्रेरणा देना शिक्षा का उद्देश्य होना चाहिए।

4. चिंतन शक्ति विकसित करने का उद्देश्य–गीता का उपदेश भगवान श्री कृष्ण के अर्जुन को "कुरुक्षेत्र" के मैदान में उस समय दिया था जब अर्जुन मोहान्धकार में फँस कर अपने कर्त्तव्य को भुला बैठा था और उसकी चिंतन शक्ति कुंठित हो गई थी। अतः

International Journal of Research in Economics and Social Sciences(IJRESS)
Available online at: http://euroasiapub.org
Vol. 8 Issue 2, February- 2018
ISSN(o): 2249-7382 | Impact Factor: 6.939 |

भगवान श्री कृष्ण ने अर्जुन को अच्छा–बुरा, हित–अहित, नैतिक–अनैतिक, कर्म–अकर्म, अपना–पराया आदि का ज्ञान कराया। परिणामतः अर्जुन की चिंतन शक्ति का विकास हुआ और उसे स्वकर्म का बोध हुआ। अतः गीता दर्शन के अनुसार बालक के चिंतन–मनन को विकसित करना शिक्षा का उद्देश्य होना चाहिए।

5. धार्मिक जीवन के विकास का उद्देश्य–भगवान श्रीकृष्ण ने गीता में कहा है– यदा–कदा हि धर्मस्य ग्लानिर्भवति भारतः.....आदि अर्थात् है। अर्जुन जब–जब धर्म की हानि और अधर्म का प्रादुर्भाव होता है, तब–तब मैं जन्म लेता हूँ और अपने भक्तों को उद्धार करता हूँ। अतः गीता दर्शन के अनुसार शिक्षा का उद्देश्य बालक में धार्मिकता की भावना का विकास करना होना चाहिए ताकि वह धर्म–अधर्म में अन्तर क सके।

6. ईश्वर की सत्ता सर्वोपरि है–भगवान श्रीकृष्ण अर्जुन के मोह को दूर करने हेतु अपना "विराट रूप" दिखलाते हैं और कहते हैं कि है अर्जुन संसार नश्वर है। सब कुछ मेरी सत्ता के अधीन है। मै जैसा चाहता हूँ वैसा होता है। मेरी इच्छा के विपरीत एक पत्ता तक भी नहीं हिल सकता। जीवन–मरण पर मेरा पूरा अधिकार है। अतः गीता दर्शन के अनुसार मानव को ईश्वर की सत्ता को सर्वोपरिमानने की भावना का विकास होना चाहिए ताकि उसकी अहं की भावना समाप्त हो सके और वह सब कार्य ईश्वर को समर्पण की भावना से पूर्ण करे।

गीता दर्शन और पाठ्यचर्या/पाठ्यक्रम

गीता दर्शन के अनुसार शिक्षाक्रम/पाठ्यक्रम को मुख्यतः दो भागों में विभक्त किया गया है जो निम्न प्रकार है–

1. परा विद्या–"परा विद्या" से तात्पर्य आध्यात्मक विद्या से है। गीता में परा विद्या के अक्षर तत्त्व, अध्यात्म व क्षेत्र आदि नामों से पुकारा गया है। परा विद्या के अन्तर्गत आत्म ज्ञान आता है। परा विद्या का ज्ञान नित्य, सत्य, पूर्ण एवं सनातन है जो त्रिकाल –भूत, भविष्यत् तथा वर्तमान में सत्य है। इसके अन्तर्गत जीव क्या है, आत्म क्या है, मृत्यु पश्चात् यह आत्म कहाँ जाती है, ईश्वर है अथवा नहीं, संसार चक्र क्या है, मनुष्य सुख व दुःख क्यों पाता है, आदि का ज्ञान समाहित है। इसमें वेद, उपनिषद्, वेदान्त,

International Journal of Research in Economics and Social Sciences(IJRESS)
Available online at: http://euroasiapub.org
Vol. 8 Issue 2, February- 2018
ISSN(o): 2249-7382 | Impact Factor: 6.939 |

पुराण आदि का अध्ययन–अध्यापन कराया जाता है। इनके माध्यम से भारतीय संस्कृति का ज्ञान देने के साथ–साथ बालक को जन्म मरण से मुक्ति प्राप्त करने की भावना का ज्ञान उत्पन्न किया जाता है ताकि वह मोक्ष प्राप्त कर सके और भव–बन्धन से मुक्ति प्राप्त कर सके।

2. अपरा विद्या– अपरा विद्या से आशय भौतिक विद्या से है। दृश्यमान सम्पूर्ण विश्व 'अपरा–विद्या' के ज्ञान का ही एक भाग है। वास्तव मे अपरा विधा जड़ प्रकृति का पूर्ण ज्ञान प्राप्त करना ही है और परा विद्या तक पहुँच पाने का एक साधन है। अपरा विद्या के अन्तर्गत समस्त प्रकार के वैज्ञानिक, सामाजिक, वाणिज्यिक विषयों का अध्ययन आता है। जिनकी सहायता से मानव इस भौतिक जगत में सफलतापूर्वक अपना जीवन–निर्वाह कर सके। अपरा विद्या, परा विद्या से श्रेष्ठ नहीं है। अपरा विद्या का ज्ञान परमावश्यक होते हुए भी यह सर्वोपरि नहीं है। अपरा विद्या का ज्ञान ज्ञानेन्द्रियों के माध्यम से प्राप्त किया जाता है। इसमें ज्योतिष, काव्य, गणित, चिकित्सा, विज्ञान, ललितकला, नृत्य कला, संगीत कला, इतिहास, भूगोल आदि विषय सम्मिलित है।

गीता दर्शन एवं अध्यापन विधियाँ

यदि गीता का ध्यानपूर्वक अध्यापन करें तो उस युग में समाज में कौन– कौनसी अध्यापन–विधियाँ प्रचलित थीं, स्पष्ट उत्तर प्राप्त हो जाता है। गीता दर्शन के अनुसार निम्नलिखित अध्यापन विधियाँ प्रचलित थीं–

(1) प्रश्नोत्तर विधि–गीता का आरम्भ ही प्रश्नोत्तर के माध्यम से होता है तथा सम्पूर्ण गीता में श्रीकृष्ण एवं अर्जुन के संवाद प्रश्नोत्तर रूप में ही हैं। प्रश्नोत्तर विधि द्वारा ही समस्त गूढ़ तत्वों का सार अर्जुन को भगवान श्रीकृष्ण ने समझाया है। अतः उस युग में, गीता दर्शन के अनुसार प्रश्नोत्तर विधि अध्यापन–विधियों में मुख्य स्थान रखती थी।

(2) वार्तालाप विधि–गीता में श्रीकृष्ण द्वारा अर्जुन की शंकाओं का सामाधान वार्ता के रूप में किया गया हैं। कभी–कभी अजुर्न ने भी अपने विचार वार्ता के रूप में प्रस्तुत किए हैं। वार्तालाप के माध्यम से तात्विक ज्ञान को जनसाधारण तक पहुँचाने का प्रयास किया गया है।

International Journal of Research in Economics and Social Sciences(IJRESS)
Available online at: http://euroasiapub.org
Vol. 8 Issue 2, February- 2018
ISSN(o): 2249-7382 | Impact Factor: 6.939 |

(3) तर्क विधि–गीता में श्रीकृष्ण अर्जुन के मोह भंग करने का अथक प्रयास करते हैं, किन्तु अर्जुन अपने तर्कों से श्रीकृष्ण के विचारों को काट देते है। इस प्रकार श्रीकृष्ण और अर्जुन अपने तर्कों द्वारा अपनी–अपनी बात के समर्थन देन का प्रयत्न करते हैं। अतः गीता दर्शन के अनुसार उस युग में तर्क विधि भी प्रचलित थी।

(4) मौखिक विधि–उत्तर वैदिक युग का समस्त साहित्य संस्कृत भाषा में है तथा श्लोक मय है। गुरु, शिष्यों को मौखिक रूप से ज्ञान प्रदान करते थे शिष्य उन श्लोकों को और प्राप्त ज्ञान को कण्ठस्थ करते थे। गुरु के मुख से निकले वाक्य वेद वाक्य के समान होता था। मौखिक विधि में 'रटना' मुख्य महत्त्वपूर्ण गुण था।

(5) अनुकरण विधि–गुरुओं का जीवन आदर्शयुक्त होता था। महापुरुषों के आदर्शमय जीवन को छात्रों के समक्ष प्रस्तुत किया जाता था और छात्रों से यह अपेक्षा की जाती कि वे महापुरुषों के आचरण के अनुरूप ही कार्य करें। शिष्यों से अपने गुरुओं के आचरण के अनुकरण करने की शिक्षा दी जाती थी।

उपसंहार

सम्पूर्ण विवेचन से स्पष्ट है कि शिक्षा क्षेत्र में और शिक्षा दर्शन के विकास में गीता का योगदान अतिमहत्त्वपूर्ण है। यह शिक्षा सार्वकालिक है जब–जब समाज में विकृतियाँ, कुरीतियाँ उत्पन्न होती है तब–तब समाज का पथ प्रशस्त करने, उन्नत करने के लिए परमात्मा को किसी शिक्षक के रूप में अवतार लेना पड़ता है और श्रेष्ठ शिक्षक ही व्यक्ति में निहित या समाज में व्यापक बुराई या कुंठा को दूर करने का प्रयास कर सफल होता है। गीता में प्रस्तुत विशुद्ध शिक्षा प्रणाली शिक्षाविदों के लिए प्रेरणास्पद है कि वे मूल्यवान ज्ञान को प्राप्त कर मूल्य उन्मुख शिक्षा की प्रासंगिकता को स्थापित कर सकें।

International Journal of Research in Economics and Social Sciences(IJRESS)
Available online at: http://euroasiapub.org
Vol. 8 Issue 2, February- 2018
ISSN(o): 2249-7382 | Impact Factor: 6.939 |

सन्दर्भ ग्रन्थ सूची

1. श्रीमद् भगवद्गीता– गीता प्रेस गोरखपुर 1973
2. गीता दर्शन– नराले डॉ. रत्नाकर प्रभात प्रकाशन, दिल्ली
3. भगवद्गीता दर्शन का कर्म सिद्धान्त– डॉ. बी.एम. वर्मा ऋषिकेश, राधा पब्लिकेशन, नई दिल्ली
4. पुरुषार्थ चतुष्टय : दार्शनिक अनुशीलन– डॉ. सुधा भटनागर, विद्या विधि प्रकाशन 1999
5. उपनिषद् प्रकाश– सत्यव्रत सिद्धान्तालंकार विजय कुमार गोविन्द राम हासानन्द, दिल्ली